प्राचीनतम जैन दर्शन और विज्ञान

(Ancient Jain Philosophy and Science)

मोहित जैन [1]

Abstract

जैन दर्शन और आधुनिक विज्ञान के बीच गहरा संबंध है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नैतिकता के संतुलन को प्रदर्शित करता है। भगवती सूत्र जैन धर्म के वैज्ञानिक पहलुओं को समाहित करने वाला प्रमुख आगम है, जिसमें पुद्गल तत्त्व, ध्वनि का स्वरूप, जल में सूक्ष्मजीव, और अहिंसा जैसे सिद्धांतों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रासंगिक दिखाया गया है। यह शोध दर्शाता है कि जैन धर्म में जो सिद्धांत पहले से वर्णित थे, वे आज के विज्ञान की खोजों से मेल खाते हैं, जैसे जल में जीवों की संख्या और पेड़ों में जीवन का अस्तित्व। श्री तत्त्वार्थसूत्र और अन्य ग्रंथों में पृथ्वी, आकाश और पाताल के माप का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह अध्ययन यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि जैन धर्म और विज्ञान के सिद्धांतों में गहरा तालमेल है और भविष्य में ये सिद्धांत और अधिक प्रासंगिक होंगे।

परिचय

जैन दर्शन विश्व का प्राचीनतम दर्शन है तथा जैन परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाली परंपराओं में से एक है। इसको "सनातन धर्म" भी कहा जाता है, क्योंकि इसका अस्तित्व अनादि से है। जैन धर्म की प्राचीनता को जानने के लिए हमें भारतीय ज्ञान परम्परा तथा उसके ग्रंथों, सिद्धान्तों और आधुनिक विज्ञान से मिलते हुए तथ्यों का तलस्पर्शी अध्ययन करना होगा। विश्व की सबसे प्राचीनतम संस्कृति वैदिक

[1] बी. एल. इंस्टीट्यूट ऑफ इण्लोलॉजी, दिल्ली. MohitJain9480@Gmail.com

संस्कृति के प्रमुख ग्रन्थ ऋग्वेद में "ऋषभ" नाम के तपस्वी और योगी का उल्लेख मिलता है। ऋषभदेव भगवान् जैन धर्म के आद्य तीर्थंकर हैं। ऋग्वेद के मंत्रों में भगवान् ऋषभदेव के गुणों का वर्णन किया गया है- "ऋषभो मरुतां पतिः।" इससे यह स्पष्ट होता है कि जैन परंपरा वैदिक काल से भी प्राचीन है। विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1300 ई. पू.) की खुदाई में प्राप्त मूर्तियों और प्रतीकों में जैन धर्म के प्रतीक मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर पद्मासन और कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानस्थ आकृतियाँ, जैन धर्म के प्रतीक स्वरूप स्वस्तिक चिह्न, वृक्ष के नीचे ध्यान मुद्रा में बैठे योगी, यह सब दर्शाते हैं कि जैन परंपरा विश्व की प्राचीन सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता के पूर्व से भी प्रचलित थी।

जैन धर्म की प्राचीनता

भगवान् ऋषभदेव को जैन धर्म का आदिगुरु, आदिब्रह्मा और प्रथम तीर्थंकर माना जाता है, जिसका वर्णन वैदिक संहिताओं, विष्णु पुराण, भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता आदि कई ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। भगवान् ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प जैसे षट्कर्मों का उपदेश सभी जीवों को दिया। इन षट्कर्मों को अपनाकर वर्तमान कर्मभूमि में सम्पूर्ण मानव जाति अपना जीवन-यापन भली-भांति कर रही है। अतः भगवान् ऋषभदेव मानव समाज को व्यवस्थित करने वाले पहले मार्गदर्शक थे। जिन्होंने प्राणी मात्र के लिये कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। इसलिए तीर्थंकरों को जैन दर्शन में कहा है-

The Tirthankaras in Jainism are regarded as the ultimate professors of spiritual science, guiding humanity on the path to liberation (moksha).

धर्म और विज्ञान- धर्म और विज्ञान को प्रायः एक-दूसरे के विरोधी के रूप में देखा जाता है। परन्तु जैन दर्शन विज्ञान को विरोधी के रूप में नहीं देखता। आधुनिक युग में विज्ञान ने अनेक धार्मिक अंधविश्वासों और पाखंडों का खंडन किया है। इस कारण कई धर्म यह दावा करते हैं कि विज्ञान और धर्म के बीच विरोधाभास है। परन्तु जैन धर्म इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करता है। जैन धर्म तो सर्वज्ञ, वीतरागी और हितोपदेशी के द्वारा बताया हुआ धर्म है। जैन दर्शन वस्तु के स्वभाव और सत्य पर आधारित है। यही कारण है कि जैन दर्शन विज्ञान (Science) की खोजों का स्वागत करता है और उन्हें प्राचीन सिद्धांतों के प्रमाण के रूप में देखता है।

यहां पर मैं जैन दर्शन और विज्ञान के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को उपस्थित करता हूँ-

१.ध्वनि (शब्द) और उसका स्वरूप- भारतीय दर्शन में अधिकांश परम्पराएं ध्वनि को अमूर्त मानती है वे इसे आकाश[2] का गुण मानती हैं। परंतु जैन दर्शन में जैनाचार्यों ने शब्द को मूर्तिमान और भौतिक बताया। आधुनिक युग में मोबाइल और रेडियो जैसे यंत्रों ने यह सिद्ध कर दिया कि ध्वनि वास्तव में भौतिक है और इसे रिकॉर्ड करके पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है। जैन धर्म के अनुसार ध्वनि एक प्रकार का पुद्गल (भौतिक तत्त्व) है। वर्तमान में यह वैज्ञानिक उपकरणों से सिद्ध हो चुका है कि ध्वनि तरंगों के रूप में संचार करती है, जो जैन दर्शन के पुद्गल स्वरूप से मेल खाती है।

२.पुद्गल तत्त्व और भौतिकता- न्याय और वैशेषिक दर्शन पृथ्वी, जल, वायु, आदि को स्वतंत्र तत्त्व मानते थे। इसके विपरीत जैनाचार्यों ने इन तत्त्वों को पुद्गल द्रव्य (भौतिक पदार्थ) की अवस्थाएँ बताया है। आधुनिक विज्ञान ने भी यही सिद्ध किया कि पानी,

[2] शब्दगुणमाकाशम्।

हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के संयोजन से बनता है और इसे पुनः वायुओं में विभाजित किया जा सकता है। जैन दर्शन में जैनाचार्यों के अनुसार पुद्गल सतत रूप से परिवर्तनशील होता है परंतु इसका अस्तित्व कभी नष्ट नहीं होता। यह सिद्धांत आधुनिक विज्ञान के भौतिक नियमों जैसे "पदार्थ संरक्षण का सिद्धांत" (Law of Conservation of Matter) के समान है।

३.महास्कंध और आधुनिक संचार तकनीक- आज हजारों मील की दूरी से शब्दों को हमारे पास तक पहुँचाने में माध्यम "ईयर" नाम के अदृश्य तत्त्वों की वैज्ञानिकों को कल्पना करनी पड़ी। किन्तु जैनाचार्यों ने हजारों वर्ष पहले ही लोकव्यापी "महास्कन्ध" नामक एक पदार्थ के अस्तित्व को बताया। इसकी सहायता से भगवान् जिनेन्द्र के जन्मादि की सूचना क्षणमात्र में समस्त जगत् में फैल जाती थी। जैन दर्शन के अनुसार "महास्कंध" एक सूक्ष्म भौतिक माध्यम है, जो संपूर्ण ब्रह्मांड में फैला हुआ है। यह माध्यम संचार का आधार है। वर्तमान विज्ञान में रेडियो तरंगों, मोबाइल तरंगो और प्रकाश तरंगों को सूचना के प्रसारण का माध्यम माना गया है। संचार के इन आधुनिक साधनों ने जैन दर्शन के "महास्कंध" के सिद्धांत की पुष्टि की है।

४.जल में सूक्ष्मजीव और अहिंसा का सिद्धांत- जैन दर्शन ने अनछने पानी की एक बूंद में असंख्यात जीवों की उपस्थिति को हजारों वर्ष पहले बताया। जैन धर्म के अनुसार बिना छना हुआ पानी पीना जीवों की हिंसा है। आधुनिक युग में माइक्रोस्कोप के आविष्कार ने यह सिद्ध कर दिया कि अनछने जल में असंख्य सूक्ष्मजीव पाए जाते हैं और वैज्ञानिकों ने अनछने पानी की एक बूंद में 36450 जीव माने हैं। यह जैन धर्म के इस सिद्धांत की वैज्ञानिक पुष्टि है कि जल की शुद्धता और अहिंसा[3] पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है।

[3] अंहिसा परमो धर्मः।

५.रात्रिभोजन का निषेध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण- जैन दर्शन में रात्रि भोजन सर्वथा निषेध है। इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि रात्रि में सूक्ष्म जीव अधिक सक्रिय होते हैं। जो हमारे भोजन में उपस्थित हो जाते हैं जिससे जीव हिंसा का दोष लगता है और रात्रि भोज हमारे स्वास्थ्य के लिये ठीक नही है। विज्ञान भी इस बात की पुष्टि करता है कि रात्रि में भोजन पाचन के लिए और हमारे स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त नहीं है साथ ही आयुर्वेद ग्रन्थ और स्वास्थ्य विज्ञान इस बात को समर्थन देते हैं कि रात्रि में भोजन से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ सकती हैं। अतः सूर्यास्त के पहले भोजन करने से स्वास्थ्य और धर्म दोनों की रक्षा होती है।

६.वनस्पति में जीवन और चेतना- जैन दर्शन ने हजारों वर्ष पहले यह बताया कि वनस्पतियों में भी जीवन होता है। जैनाचार्यों ने आगम ग्रन्थों में वनस्पतियों की चेतना और संवेदनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। आधुनिक विज्ञान ने तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वर्गीय जगदीशचंद्र बसु जैसे वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि पेड़-पौधों में भी जीवन है वे भी संवेदनशील होते हैं और बाहरी उत्तेजनाओं पर प्रतिक्रिया करते हैं। उनके यंत्रों ने यह दिखाया कि पौधे सुख-दुख का अनुभव कर सकते हैं।

७.जैन धर्म का सिद्धांत: वस्तु का विनाश नहीं होता- जैन दर्शन में जैनाचार्यों ने कहा है कि पदार्थ का पूर्ण विनाश संभव नहीं है। यह केवल अपनी अवस्थाओं को परिवर्तित करता है। आचार्यों ने "सत् द्रव्यलक्षणम्" कहकर कहा द्रव्य का लक्षण सत् है। वस्तु में उत्पत्ति, व्यय और नित्यपना रहता है, परन्तु वस्तु का विनाश कभी नही होता। आधुनिक विज्ञान के द्वारा भी इस सिद्धांत को स्वीकार किया गया है। जिसे "ऊर्जा और पदार्थ संरक्षण का सिद्धांत"

के नाम से जाना जाता है। जिसके अनुसार पदार्थ का संपूर्ण विनाश असंभव है, यह केवल रूप बदलता है।

८.पदार्थ की अनंत शक्तियाँ- जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक पदार्थ में अनंत शक्तियाँ विद्यमान होती हैं। वर्तमान समय में वैज्ञानिक भी एक साधारण पदार्थ से असाधारण ऊर्जा और शक्तियाँ निकालने में सक्षम हैं। उदाहरण के तौर पर परमाणु ऊर्जा एक छोटा लेकिन शक्तिशाली उदाहरण है। इसने दिखाया कि पदार्थ में कितनी विशाल ऊर्जा छिपी होती है।

९.अनेकांतवाद और सापेक्षता का सिद्धांत- जैन दर्शन का "अनेकांतवाद" सिद्धान्त जिसे "सापेक्षतावाद" का सिद्धान्त भी कहा जाता है। यह सिद्धान्त सत्य की बहुआयामी व्याख्या करता है। इसके अनुसार सत्य को केवल एक दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता, बल्कि इसके विभिन्न पहलू हो सकते हैं। इस सिद्धान्त को जैनाचार्यों ने कई वर्षों पूर्व कथन किया। आधुनिक वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन का "सापेक्षता का सिद्धांत" (Theory of Relativity) भी इसी दृष्टिकोण पर आधारित है। आइंस्टाइन का यह सिद्धांत जैन दर्शन के अनेकांतवाद के वैज्ञानिक रूप में देखा जा सकता है।

१०.जैन धर्म और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की एकरूपता- जैन धर्म का हर सिद्धांत वैज्ञानिकता और नैतिकता का अनूठा संतुलन प्रस्तुत करता है। जैन दर्शन में जीव विज्ञान, भौतिकी और संचार से जुड़े गूढ़ सिद्धांत जैसे पुद्गल द्रव्य, जल में सूक्ष्मजीव और महास्कंध आदि वर्तमान में वैज्ञानिक अनुसंधानों से प्रमाणित हो चुके हैं। अहिंसा, रात्रिभोजन निषेध और वनस्पतियों में जीवन की अवधारणाएँ वैज्ञानिक दृष्टि से तर्कसंगत और व्यावहारिक हैं। जैन दर्शन के सभी ग्रन्थ सत्यता, नैतिकता और वैज्ञानिकता के अद्भुत् संगम हैं। जो आत्मा

और पदार्थ के शाश्वत् सत्य को प्रकट करते हैं। जैन दर्शन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्वीकार कर अपने सिद्धांतों की प्रामाणिकता को सिद्ध करता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सम्पूर्ण कथन के आधार पर हम कह सकते हैं कि, जैन धर्म और विज्ञान के बीच गहरा संबंध है। जैन धर्म के प्राचीन सिद्धांत न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रासंगिक हैं, बल्कि आधुनिक विज्ञान भी उन्हें सत्यापित करता है। जैसे-जैसे विज्ञान प्रगति करेगा जैन धर्म की शिक्षाएँ एवं सिद्धान्त और भी स्पष्ट और उपयोगी सिद्ध होंगी। जैन धर्म और विज्ञान का यह संगम न केवल ज्ञान का विस्तार करता है, बल्कि नैतिकता और सत्य पर आधारित जीवन जीने की प्रेरणा भी देता है।

॥इति शम्॥

DHARMA FOR LIFE
India's Ancient Wisdom in Modern Light
॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥